राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक १] तृतीय विधान सभा के प्रथम सत्र, १९६२ का द्वितीय दिवस [संख्या २

बुधवार, दिनांक १४ मार्च, १९६२

विधान सभा की बैठक म० पू० ११ बज कर ८ मिनट पर विधान सभा भवन जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(राव श्री नारायण सिंह, अस्थायी अध्यक्ष, पदासीन)

श्री राधाकृष्ण गोयल द्वारा शपथ ग्रहण करना

श्री अस्थाई अध्यक्ष : श्री राधाकृष्ण गोयल।

[श्री राधाकृष्ण गोयल (टोंक) ने शपथ ग्रहण की।]

अध्यक्षीय निर्वाचन

श्री अस्थाई अध्यक्ष (राव श्री नारायण सिंह) : अब अध्यक्ष का चुनाव होगा। तो श्री मोहनलाल सुखाड़िया मोशन मूव करेंगे।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (सदन के नेता) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि श्री रामनिवास मिर्धा, सदस्य, विधान सभा, विभाजन संख्या १४५, राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष निर्वाचित किये जावें।

श्री मथुरादास माथुर (गृह मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं, जो श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने प्रस्ताव रखा है उसका समर्थन करता हूँ।

श्री अस्थाई अध्यक्ष : मोशन यह है, "कि श्री रामनिवास मिर्धा, सदस्य, विधान सभा, विभाजन संख्या १४५, राजस्थान लेजिस्लेटिव एसेम्बली के स्पीकर चुने जावें" मोशन रखा गया।

(स्वीकृत)

श्री रामनिवास मिर्धा अध्यक्ष चुने गये।

[सदन के नेता, श्री मोहनलाल सुखाड़िया एवं विपक्ष के नेता महारावल श्री लक्ष्मणसिंह ने नव निर्वाचित अध्यक्ष, श्री रामनिवास मिर्धा, को अध्यक्ष पद ग्रहण करने हेतु प्रार्थना की एवं उन्हें अध्यक्षीय आसन पर आसीन करवाया]

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य-मंत्री) : माननीय अध्यक्ष, इस अवसर पर मैं इस बात के लिए अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त करता हूं कि सदन ने आप में एक मत से, पूर्ण विश्वास रखते हुए निर्विरोध आपको इस पद के लिए चुना। पिछले पांच वर्षों में इस सदन की कार्यवाही को आपने संचालित किया है। आपका अनुभव इस पद के लिए काफी रहा है और सदन को भी समय समय पर आपके द्वारा उचित मार्ग-दर्शन प्राप्त होता रहा है। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि हमारी तरफ से आपके उच्च पद को हमेशा पूर्ण श्रद्धा और सहयोग प्राप्त होते रहेंगे।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (आस-पुर-स्वतंत्र पार्टी, विपक्ष के नेता) : मैं अपनी पार्टी की ओर से श्रीमान् अध्यक्ष महोदय को अनेकों शुभेच्छाओं के साथ अपना हार्दिक धन्यवाद पेश करता हूं।

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर जनसंघ) : अध्यक्ष महोदय, आपके दूसरी बार निर्विरोध निर्वाचन के लिये मैं अपने दल की ओर से आपको बधाई देता हूँ और अपने दल की ओर से यह भी आपको विश्वास दिलाता हूँ कि सदन की कार्यवाही में मेरा दल हमेशा आपका सहयोग करता रहेगा। आज हमने जिस परम्परा का निर्माण किया है वह परम्परा बाकी के स्थानों के लिये तो अनुकरणीय है ही लेकिन इस परम्परा का प्रजातन्त्र में जिस प्रकार का महत्व है, उस महत्व का मूल्यांकन समय आने पर ही हम कर सकेंगे, लेकिन प्रत्यक्ष में जो इसका मूल्यांकन करेंगे वह प्रजातन्त्र की एक स्वस्थ परम्परा के रूप में इसे स्वीकार करेंगे। मैं ऐसा समझता हूँ कि हमारे इस प्रजातन्त्र के शासन-काल में इस प्रकार की परम्पराओं का निर्माण होना बहुत ही आवश्यक है और इस आधार के ऊपर हम लोग यह भी पसंद करेंगे कि विधान सभा में उपाध्यक्ष महोदय का निर्वाचन भी इसी प्रकार से हो। विरोधी दल ने आपके निर्वाचन में जैसा इस परम्परा के निर्माण में सहयोग दिया है मैं आशा करता हूँ कि सत्तारूढ़ दल विधान सभा के उपाध्यक्ष पद के निर्वाचन में वैसी ही स्वच्छ परम्परा का निर्माण करेगा।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको पुनः बधाई देते हुए अपना स्थान ग्रहण करता हूँ।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर-साम्यवादी) : अध्यक्ष महोदय, मैं कॉम्युनिस्ट दल की ओर से आपके इस सदन के अध्यक्षपद पर निर्विरोध चुने जाने के लिये आपको हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ। मैं आपको यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि इस सदन की कार्यवाही के संचालन में आपको हमारे दल की ओर से हमेशा स्वस्थ सहयोग मिलेगा। हम आपसे भी यही आशा करते हैं। बेशक, आप इस सदन के अध्यक्ष चुने जाने से पहले एक राजनैतिक दल के प्रतिनिधि के रूप में इस सदन में चुन कर आये हैं लेकिन अब इस सदन के अध्यक्ष चुने जाने के पश्चात् आप निष्पक्ष एवं निर्भीक होकर सब दलों के प्रति एक समान भाव और न्यायपूर्ण दृष्टि रख कर इस सदन के कार्य का संचालन करेंगे।

मैं आपको फिर आपके इस निर्वाचन के लिये बधाई पेश करता हूँ।

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर-प्रजा समाजवादी) : मैं प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की ओर से राजस्थान विधान सभा के जो

(श्री मुरलीधर व्यास)

अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं उसके लिये अपने दल की ओर से बधाई देता हूँ।

हमारे यहां जनतन्त्र की परम्परा रही है कि जहां तक अध्यक्ष के चुनाव का सम्बन्ध है उनके निर्वाचन क्षेत्र तक में विरोध नहीं होता है। कई जगह तो अध्यक्ष होते हैं उनके खिलाफ कोई केन्डीडेट खड़ा नहीं होता है और इसका गौरव वहां है। हम इस परम्परा में आगे नहीं बढ़े हैं पर यह भी लोकतन्त्र की सफलता का अंग माना गया है। आज सर्व-सम्मति से हमने अध्यक्ष का चुनाव किया, यह लोकतन्त्र की सफलता है। इसके साथ ही साथ हम महसूस करते हैं कि लोकतन्त्र में सत्ताधारी दल का अध्यक्ष हो तो उपाध्यक्ष विरोधी दल का हो। यह लोकतन्त्र की सफलता का अच्छा चिन्ह माना जाता है। जहां कहीं इस प्रकार की चीज़ होती है वहां जनतन्त्र फलता-फूलता और आगे बढ़ता है। हमें उम्मीद है कि हमने इस लोकतन्त्र को माना है और इसको फलता-फूलता देखना चाहते हैं। इसके लिये हम आशा करते हैं कि जिस प्रकार अध्यक्ष का सर्व सम्मति से चुनाव हुआ उसी तरह हम इस तरह की परम्परा डालें कि उपाध्यक्ष विरोधी दल का हो और उसका चुनाव भी निर्विरोध हो। इससे अच्छी परम्परा होगी। इसके लिये मैं उम्मीद करता हूँ कि सत्तारूढ़ दल इस प्रकार की परम्परा डालेगा।

एक बार फिर मैं जो महानुभाव अध्यक्ष चुने गये हैं उन्हें बधाई देता हूँ।

श्री रामकिशन शर्मा (बैर समाज-वादी) : अध्यक्ष महोदय, मैं सोशलिस्ट पार्टी की ओर से आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि लोकतान्त्रिक विरोध और लोकतान्त्रिक सहयोग, दोनों, आपको हमारी पार्टी की ओर से मिलते रहेंगे। साथ ही कहना चाहता हूँ कि आप जिस प्रकार हमसे सहयोग की आशा करते हैं उसी तरह हम भी आप से लोक-तन्त्रीय विरोध को सहने की क्षमता के प्रदर्शन की आशा करते हैं। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हमारा दल विधान और लोक-तन्त्र की मर्यादाओं के भीतर रहते हुए सहयोग देता रहेगा।

रावल श्री अमरसिंह (पचपदरा-निर्दलीय) : अध्यक्ष महोदय, निर्दलीय सदस्य की हैसियत से मैं आपको आपके निर्विरोध अध्यक्ष पद पर चुनाव के लिये हार्दिक बधाई देता हूँ।

आपका निर्विरोध आना इस बात का द्योतक है कि यह आवश्यक नहीं कि विरोधी दल हर बात में सत्तारूढ़ दल का विरोध करता रहे। आपका कोई कार्य उचित है, न्यायोचित है, उसका विरोधी दल समर्थन करता है, यह हैल्दी ट्रेडिशन कायम करता है। इसके लिये हम राजस्थानी हमेशा गर्व अनुभव करते हैं।

निर्दलीय दल के मेम्बर की हैसियत से हम लोग इस उद्देश्य के साथ इस सदन में आये हैं कि जहां सत्य है, जहां न्याय है उसका हम हमेशा समर्थन करते रहें और उसके विपरीत जो टेन्डेन्सीज़ हैं उनका विरोध करें। अच्छा सुराज्य हो, अच्छा वर्ईवट हो उसके हमेशा हिमायती रहेंगे। आपके अध्यक्ष पद में हमारा सदैव सहयोग बना रहेगा, यह विश्वास दिलाना चाहता हूं।

(रावल श्री अमरसिंह)

पुनः हार्दिक बधाई देते हुए अपना वक्तव्य समाप्त करता हूं।

श्री नत्थीसिंह (भरतपुर-निर्दलीय) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं निर्दलीय दल की ओर से हार्दिक बधाई पेश करता हूं और निवेदन करता हूं कि जिस तरह से सारे दलों ने आपके अनुभव की कद्र की है उसी प्रकार आप भी हमारा एक ही दृष्टि से निष्पक्षता रखते हुए ध्यान रखेंगे। आपके द्वारा दुबारा इस पद पर निर्वाचित होने के लिए मैं बधाई पेश करता हूं।

श्री हरदत्तसिंह (नौहर-निर्दलीय) : अध्यक्ष महोदय, निर्दलीय सदस्य होने के नाते, मेरे साथी ने निर्दलीय दल कहा है उसके बारे में मैं कुछ न कह कर इतना ही अर्ज कर दूं कि जिस तरह निर्दलीय सदस्य का पार्टियों की खींचातान में चुना जाना एक स्वस्थ परम्परा है उसी प्रकार निर्दलीय सदस्य की तरह से विश्वास दिलाना चाहता हूं कि जिस प्रकार से आज यह स्वस्थ परम्परा कायम हुई है उसी प्रकार आयन्दा भी स्वस्थ परम्परा कायम होगी।

एक बात अर्ज कर देना चाहता हूं कि आयन्दा डिप्टी स्पीकर का चुनाव हो उसमें पार्टीज़ की खींचतान के मुकाबले में निर्दलीय सदस्य का चुना जाना आवश्यक है। इन शब्दों के साथ मैं पुनः बधाई देता हूं।

श्री अध्यक्ष (श्री रामनिवास मिर्धा) : माननीय सदस्यों ने जो मुझे इस पद के लिए निर्विवाद तरीके से चुना है उसके लिए मैं आप सब का बहुत ही आभारी हूं। सदन के माननीय नेता, अन्य पार्टियों के नेतागण और अन्य माननीय सदस्यों ने जो बातें कही हैं उनके लिए भी मैं बहुत ही आभारी हूं, विशेष तौर से उनके इस आश्वासन के लिए कि अध्यक्ष का कार्य सुचारु रूप से निभाने के लिए आप सब का सहयोग मुझे सदैव मिलता रहेगा।

संसदीय प्रणाली जिसके अन्तर्गत हम हमारे इस प्रजातन्त्र का संचालन करते हैं उसमें अध्यक्ष के पद का एक विशेष महत्व है, एक विशेष स्थान है। सदन के जो माननीय सदस्य हैं उनके अधिकारों की रक्षा और उस सब केऊ पर जो सदन की प्रतिष्ठा है उसकी रक्षा करना अध्यक्ष का कर्तव्य है। यह एक बहुत ही कठिन जिम्मेवारी है और उसको निभाना तब ही संभव हो सकता है जब कि आप सब माननीय सदस्य; चाहे इस ओर बैठे हों, चाहे उस ओर बैठे हों सक्रिय सहयोग देते रहें। हमें स्वस्थ परम्परा का निर्माण करना है और परम्परायें हैं जो उनको आगे बढ़ाना और निभाना है और उसके लिए आप सबका सहयोग आवश्यक है।

आपने सहयोग की बात कही उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मैं आशा करता हूं कि आप सब के सहयोग के साथ इस पद का भार ठीक तरह से चला सकूंगा। जहां तक व्यक्तिगत सम्बन्ध है मैं निःसंकोच कह सकता हूं कि आप सब के अधिकारों की रक्षा करना और सदन की प्रतिष्ठा की रक्षा करना मैं अपना कर्तव्य मानूंगा। इसके साथ साथ आप सबका सहयोग भी मैं आवश्यक मानूंगा। मैं आशा करता हूं कि इस सदन को चलाने और प्रजातन्त्र को सफल बनाने के लिए आप सबका पूरा सहयोग मिलता रहेगा।

Page No. 5

(श्री अध्यक्ष)

अब सदन की कार्यवाही स्थगित की जाती है। जैसी कि सूचना दी गई थी आज शाम को राज्यपाल महोदय का अभिभाषण होगा। कुछ समय पूर्व ही आकर आप सब अपना स्थान ग्रहण कर लें।

[तदनन्तर सदन की कार्यवाही म० पू० ११.२५ बजे, म० पू० ४ बजे राज्यपाल महोदय के अभिभाषण एवं १५ मार्च, १९६२ को म० पू० ११ बजे पुनः मिलने तक के लिए स्थगित हुई]

संक्षिप्त–विवरण

(बुधवार, १४ मार्च, १९६२)

शपथ या प्रतिज्ञान ३३

आज श्री राधाकृष्ण गोयल ने शपथ ग्रहण की।

अध्यक्ष महोदय का निर्वाचन ३३

विधान सभा के अध्यक्ष के निर्वाचन के संबंध में केवल एक प्रस्ताव की सूचना प्राप्त हुई थी जिसे सदन के नेता श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने प्रस्तुत किया एवं श्री मथुरादास माथुर ने उसका समर्थन किया।

तत्पश्चात् सदन द्वारा सर्व सम्मति से श्री रामनिवास मिर्धा चुने जाकर अध्यक्ष घोषित किये गये। सदन के नेता श्री मोहनलाल सुखाड़िया तथा विपक्ष की ओर से श्री लक्ष्मणसिंह ने नव निर्वाचित अध्यक्ष के समीप आकर अध्यक्ष का आसन ग्रहण करने के लिये उन्हें निवेदन किया। श्री रामनिवास मिर्धा ने तदुपरान्त अध्यक्ष का स्थान ग्रहण किया।

सदन के नेता तथा श्री लक्ष्मणसिंह (स्वतंत्र), श्री भैरोंसिंह (जनसंघ), श्री रामानन्द (साम्यवादी), श्री मुरलीधर व्यास (प्रजा समाजवादी), श्री रामकिशन (समाजवादी) तथा सर्व श्री अमरसिंह, नाथीसिंह एवं हरदत्तसिंह ने नव निर्वाचित अध्यक्ष को बधाई दी। प्रत्युत्तर में अध्यक्ष महोदय ने सदस्यों से भविष्य में सहयोग की कामना करतेहुए अपने प्रति प्रदर्शित सद्भावना के लिये आभार प्रकट किया।

तदुपरान्त ११ बजकर २५ मनिट पर सभा की कार्यवाही समाप्त हुई।

राज्यपाल महोदय का अभिभाषण

सायं ४, ५ बजे राज्यपाल महोदय, राजस्थान राज्य, ने सभा भवन में पधार कर इस सत्र में समवेत् विधान सभा के सदस्यों के सम्मुख अभिभाषण दिया।

गुरुवार, दिनांक १५ मार्च, १९६२
की कार्य-सूची

(१) सदन की मेज पर विविध प्रतिवेदनों का उपस्थापन।

(२) राजपाल महोदय के अभिभाषण पर सामान्य वाद—विवाद।

शुद्धि-पत्र

(बुधवार, दिनांक १४ मार्च, १९६२)

स्तम्भ संख्या	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
१	२	३	४
२३	१	ब्ठक	बैठक
२५	१८	पेषित	प्रेषित
३३-३४	शीर्षक	माननीय सदस्यों द्वारा शपथ-१४ मार्च, ६२ अथवा प्रतिज्ञान	संक्षिप्त-विवरण-१४ मार्च, ६२-संक्षिप्त-विवरण
३४	६	करतेहुए	करते हुए